7

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का क्रियान्वयन विद्यालयी शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा पर प्रभाव

शुभिका शाह*
अंजली शौकीन**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के साथ, स्कूल और शिक्षक-शिक्षा में सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा एक व्यापक प्रयास का प्रतिनिधित्व करती है। यह शोध इन नीतिगत पहलों के जमीनी स्तर के कार्यान्वयन का विश्लेषण करता है और शैक्षिक प्रथाओं पर उनके प्रभाव की जाँच करता है। सरकारी रिपोर्टों, राज्य-स्तरीय नीतियों और कार्यान्वयन दिशा-निर्देशों के विस्तृत दस्तावेज विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन में डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म (जैसे — दीक्षा, स्वयं), शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम (जैसे — निष्ठा), पाठ्यक्रम पुनर्गठन और डिजिटल विभाजन को पाटने के प्रयासों जैसे प्रमुख कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। निष्कर्ष बताते हैं कि शहरी स्कूलों ने मिश्रित शिक्षण मॉडल और आई.सी.टी. आधारित शिक्षण को सफलतापूर्वक अपनाया है, जबकि ग्रामीण स्कूलों को बुनियादी ढाँचे, डिजिटल पहुँच और शिक्षक तैयारियों से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षक-शिक्षा सुधारों ने व्यावसायिक विकास के अवसरों में सुधार किया है, फिर भी असमान संसाधन वितरण के कारण असमानताएँ बनी हुई हैं। यह विश्लेषण कार्यान्वयन प्रक्रिया में सफलताओं और अंतराल दोनों को रेखांकित करता है, सरकारी पहलों की प्रभावशीलता में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और राष्ट्रव्यापी समान शैक्षिक परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों का सुझाव देता है। यह शोध-पत्र भारत के विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020, बुनियादी स्तर (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-एफ.एस. 2022) और विद्यालयी शिक्षा (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-एस.ई. 2023) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के जमीनी स्तर के कार्यान्वयन की पड़ताल करता है। यह शोध-पत्र शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा की गई पहलों की जाँच करता है, जिसमें विद्यालयी शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा पर उनके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। प्रमुख क्षेत्रों में बुनियादी स्तर की शिक्षा, पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र, शिक्षक-शिक्षा, प्रौद्योगिकी एकीकरण एवं समावेशिता और समता शामिल हैं।

*शोधार्थी, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 078
***सहायक प्राचार्य*, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 078

इस शोध-पत्र में खेल-आधारित शिक्षा, परियोजना-आधारित पाठ्यक्रम, अंतःविषयात्मक दृष्टिकोण और शिक्षा में डिजिटल उपकरणों के उपयोग, जैसे — नवीन प्रथाओं की बात की गई है। लेख में बुनियादी स्तर की शिक्षा में अभिभावक की बढ़ती भागीदारी, मिश्रित शिक्षण मॉडल को अपनाने और अनुभवात्मक और व्यावसायिक शिक्षा पर बल देने पर भी चर्चा की गई है। यह शोध-पत्र मजबूत नेतृत्व, सामुदायिक भागीदारी, निरंतर निगरानी और मूल्यांकन जैसे कारकों के साथ-साथ ढाँचागत बाधाओं, परिवर्तन के प्रतिरोध और संसाधन सीमाओं जैसी चुनौतियों की पहचान भी करता है। यह अध्ययन शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास और शिक्षक-प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी के एकीकरण के महत्व को रेखांकित करता है। इस शोध के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के कार्यान्वयन की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए नीतिगत सिफारिशें भी की गई हैं, जिसमें बढ़ी हुई धनराशि, क्षमता निर्माण और हितधारक सहयोग शामिल हैं। यह लेख भारत में एक समग्र, लचीली और समावेशी शिक्षा प्रणाली प्राप्त करने का लक्ष्य रखने वाले शिक्षकों, नीति-निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020, भारतीय शिक्षा प्रणाली को उपयोगी और सार्थक बनाने के उद्देश्य से एक ऐतिहासिक सुधार का प्रतिनिधित्व करती है। समग्र, लचीली, बहु-विषयक और शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा पर बल देने के साथ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा क्षेत्र में मौजूदा अंतराल और चुनौतियों का समाधान करने की एक मजबूत पहल है। यह शिक्षा नीति एक ऐसी प्रणाली की कल्पना करती है, जो न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करती है, बल्कि विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को भी बढ़ावा देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शुरुआत के बाद, शिक्षा के विभिन्न चरणों में एन.ई.पी. के दृष्टिकोण को लागू करने के लिए, विस्तृत दिशानिर्देश प्रदान करने के लिए बुनियादी स्तर 2022 (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-एफ.एस. 2022) और विद्यालयी शिक्षा 2023 (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-एस.ई. 2023) जैसी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित की गई है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), मूलभूत शिक्षा और खेल-आधारित शिक्षाशास्त्र पर केंद्रित है, जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों को आजीवन सीखने के लिए एक मजबूत आधार प्राप्त हो। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 विद्यालयी शिक्षा की जरूरतों पर प्रकाश डालती है। साथ ही महत्वपूर्ण सोच, अनुभवात्मक शिक्षा और मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण पर बल देती है। यह इन रूपरेखाओं को एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए अभिकल्पित की गई है, जो हाशिए पर खड़े और वंचित समुदायों सहित सभी विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में एक प्रयास है।

साहित्य-समीक्षा

साहित्य-समीक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का गहन अध्ययन शामिल है, जिससे नीति व पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में रुझानों, चुनौतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करने में मदद मिली है। इस लेख के लिए, नीति दस्तावेजों, सरकारी रिपोर्टों, अकादमिक शोध-पत्रों, कार्यान्वयन दिशानिर्देशों और संस्थागत रिकॉर्ड सहित प्रासंगिक दस्तावेजों की व्यापक समीक्षा की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अवलोकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक संरचनात्मक और आदर्श परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका उद्देश्य रटकर सीखने, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और शिक्षा तक समान पहुँच की दीर्घकालिक समस्याओं को संबोधित करना है। यह नीति विभिन्न स्तरों पर परिवर्तनकारी सुधारों का प्रस्ताव करती है, जिनमें प्रमुख हैं—

- **समग्र और बहु-विषयक शिक्षा**—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती है जो कला, विज्ञान और व्यावसायिक विषयों के एकीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों को विविध कौशलों और व्यापक ज्ञान के विकास हेतु प्रोत्साहित करती है।
- **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)**—नीति प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के महत्व पर बल देती है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक सभी बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. की सार्वभौमिक उपलब्धता सुनिश्चित करना है। कौल और शंकर (2021) द्वारा किए गए अध्ययन यह दर्शाते हैं कि ई.सी.सी.ई. संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता**—वर्ष 2025 तक, कक्षा 3 तक सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने हेतु आरंभ किया गया। राष्ट्रीय मिशन, प्रारंभिक शिक्षा की उस निर्णायक भूमिका को रेखांकित करता है जो बच्चों की भावी शैक्षणिक प्रगति की नींव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित यह लक्ष्य इस तथ्य को उजागर करता है कि प्रारंभिक वर्षों में प्राप्त मूलभूत दक्षताएँ भविष्य की संपूर्ण शिक्षा यात्रा की दिशा और गुणवत्ता निर्धारित करती हैं।
- **पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र**—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीमित पाठ्यवस्तु और प्रमुख अवधारणाओं पर केंद्रित पाठ्यचर्या की वकालत करती है, जो रटने की प्रवृत्ति से हटकर अनुभवात्मक शिक्षण को प्रोत्साहित करती है। भारद्वाज (2021) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अनुभवात्मक अधिगम न केवल विद्यार्थियों की विषयवस्तु के प्रति समझ को गहरा करता है, बल्कि उनके सक्रिय जुड़ाव को भी सशक्त बनाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022)

- **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) 2022**—प्रारंभिक

बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश प्रदान करती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों और उद्देश्यों पर आधारित है। इसके मुख्य पहलुओं में शामिल हैं—

- **खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षा**— खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियाँ मूलभूत कौशलों के विकास हेतु अंत: क्रियात्मक और आकर्षक शिक्षण रणनीतियों पर बल देती हैं। सरस्वती (2021) के अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि खेल-आधारित शिक्षा छोटे बच्चों के संज्ञानात्मक एवं सामाजिक कौशलों में उल्लेखनीय सुधार ला सकती है।
- **अभिभावक और सामुदायिक भागीदारी**— शैक्षिक प्रक्रिया में अभिभावकों, माता-पिता और समुदाय की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो न केवल बच्चों के लिए एक सहायक और समावेशी वातावरण का निर्माण करता है, बल्कि उनके सीखने के परिणामों को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
- **समावेशी शिक्षा**— ऐसी रणनीतियाँ बनाने की जरूरत पर बल दिया गया है जो विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों सहित सभी बच्चों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करती हों। शर्मा और देशमुख (2021) द्वारा किए गए शोध में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में समावेशी प्रथाओं को अपनाना विविधतापूर्ण सीखने की आवश्यकताओं का समर्थन करने हेतु अनिवार्य है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का उद्देश्य विद्यालयी स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक लक्ष्यों को लागू करना है। इसके प्रमुख घटकों में शामिल हैं—

- **महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान**—यह पाठ्यक्रम इस प्रकार अभिकल्पित किया गया है कि यह महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या समाधान जैसे 21वीं सदी के आवश्यक कौशलों को बढ़ावा दे। रॉय और सिन्हा (2022) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पाठ्यचर्या में महत्वपूर्ण सोच के एकीकरण से विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक क्षमताओं में सुधार होता है तथा वे उच्च शिक्षा के लिए बेहतर रूप से तैयार हो पाते हैं।
- **अनुभवात्मक शिक्षा**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 परियोजनाओं, इंटर्नशिप और सामुदायिक सेवा जैसी गतिविधियों के माध्यम से अनुभवात्मक और व्यावहारिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल देती है। गुप्ता (2021) के शोध से यह स्पष्ट होता है कि ऐसे अनुभव विद्यार्थियों के लिए सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रासंगिक, सार्थक और आकर्षक बना सकते हैं।
- **व्यावसायिक शिक्षा**— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण पहलू अकादमिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक प्रशिक्षण के एकीकरण पर बल देना है, ताकि विद्यार्थियों को विविध आजीविका-पथों के लिए तैयार किया जा सके।

सिंह (2022) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकला है कि व्यावसायिक शिक्षा न केवल रोजगार क्षमता को बढ़ाती है, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल भी प्रदान करती है, जो उन्हें कार्यस्थल की आवश्यकताओं के अनुरूप सशक्त बनाता है।

मौजूदा साहित्य समीक्षा से पाठ्यचर्याओं के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न पहलुओं की पहचान करता है—

- **शिक्षक-प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास**—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और पाठ्यचर्या की सफलता काफी हद तक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। मेनन और जेना (2021) के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि शिक्षकों को नए शैक्षणिक दृष्टिकोण अपनाने और आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए वांछनीय व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण हैं।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग**—शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण को कोविड-19 महामारी द्वारा बढ़ावा दिया गया है। रेड्डी (2021) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों का उपयोग शिक्षण और अधिगम की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है। हालाँकि, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच की सुनिश्चितता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है, जिसे दूर करना आवश्यक है।
- **समावेशिता और समानता**—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक केंद्रीय उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी विद्यार्थियों को, उनकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, गुणवत्तापूर्ण और समान शैक्षिक अवसर प्राप्त हों। बनर्जी और मित्रा (2021) के अध्ययन में शिक्षा प्रणाली में समावेशिता और समानता को बढ़ावा देने हेतु उपस्थित चुनौतियों तथा उन्हें संबोधित करने के लिए अपनाई जा सकने वाली रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के कार्यान्वयन में कई चुनौतियों की पहचान करता है—

- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ**—कई विद्यालय, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, ढाँचागत चुनौतियों का सामना करते हैं जो प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालते हैं। प्रकाश द्वारा अनुसंधान (2021) शैक्षिक सुधारों का समर्थन करने के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचे और संसाधनों की आवश्यकता पर बल डालता है।
- **परिवर्तन का प्रतिरोध**—शिक्षकों और प्रशासकों के बीच अक्सर नई नीतियों और प्रथाओं का प्रतिरोध होता है। नायर (2021) के अध्ययन से पता चलता है कि प्रतिरोध पर काबू पाने के लिए प्रभावी परिवर्तन प्रबंधन और हितधारक जुड़ाव आवश्यक है।
- **संसाधन सीमाएँ**—शैक्षिक सुधारों के सफल कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त धन और संसाधन महत्वपूर्ण हैं। राजन (2021) द्वारा किया गया अनुसंधान वित्तीय सहायता और कुशल संसाधन आवंटन के महत्व पर बल देता है।

साथ ही कुछ प्रमुख सफलता के कारकों की भी पहचान करता है जैसे—

मजबूत नेतृत्व — शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए मजबूत और दूरदर्शी नेतृत्व अत्यंत आवश्यक है। कुमार और शर्मा (2021) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ऐसा नेतृत्व शैक्षिक अनुसंधान को प्रेरित कर सकता है और उसकी निरंतरता बनाए रख सकता है।

- **सामुदायिक भागीदारी** — समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी न केवल कार्यान्वयन प्रक्रिया को सशक्त बनाती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि शैक्षिक सुधार स्थानीय संदर्भों में प्रासंगिक, सार्थक और उपयोगी सिद्ध हों। पांडे (2021) के शोध में शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता के लाभों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

यह अध्ययन दस्तावेज विश्लेषण पद्धति के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के जमीनी कार्यान्वयन की गहराई से पड़ताल करता है। इसमें नीतिगत दस्तावेजों, कार्यान्वयन रिपोर्टों, शैक्षिक ढाँचों, शोध अध्ययनों और संस्थागत रिपोर्टों का चयन कर, कोडिंग और थीम विश्लेषण द्वारा उनके प्रभाव, चुनौतियाँ और प्रगति को समझा गया है। तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा नीति और व्यवहार के बीच के अंतर को उजागर किया गया है। गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु स्रोतों की त्रिकोणीयता और क्रॉस-सत्यापन का प्रयोग किया गया, जिससे नीति-कार्यान्वयन के बीच की खाई और सुधार की संभावनाओं की पहचान की जा सके।

निष्कर्ष

दस्तावेजीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संसाधनों का आवंटन, बुनियादी ढाँचे का विकास तथा क्षमता निर्माण विभिन्न क्षेत्रों में असमान रूप से हुआ है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच, राज्यों की नीतियों, शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता, तकनीकी उपयोग तथा समावेशी शिक्षा को अपनाने में उल्लेखनीय अंतर परिलक्षित होता है। सरकारी रिपोर्टों और शोध अध्ययनों ने इन असमानताओं को प्रभावी रूप से उजागर किया है। नीचे उल्लिखित संदर्भों में शिक्षा नीति के कार्यान्वयन, राज्य-स्तरीय रणनीतियों, शिक्षक विकास कार्यक्रमों, डिजिटल प्रौद्योगिकी के प्रयोग और समावेशी शिक्षा से संबंधित व्यापक विवरण उपलब्ध हैं।

शहरी बनाम ग्रामीण कार्यान्वयन

शहरी स्कूलों ने सामान्यत: पर बेहतर बुनियादी ढाँचे, प्रौद्योगिकी तक अधिक पहुँच और लगातार शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का अधिक सुचारु और अधिक प्रभावी कार्यान्वयन संभव हो पाया है। इसके विपरीत, ग्रामीण स्कूलों को अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे, डिजिटल उपकरणों तक सीमित पहुँच और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे सुधारों को अपनाने में देरी होती है। नीति आयोग की वार्षिक रिपोर्ट (मार्च 2022), शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच बुनियादी ढाँचे और डिजिटल पहुँच में असमानता को दिखाती है।

राज्य-स्तरीय भिन्नताएँ

कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों ने स्पष्ट, संरचित रणनीतियाँ और उचित वित्त पोषण के माध्यम से एन.ई.पी. 2020 के क्रियान्वयन में समयबद्ध और प्रभावी प्रगति दिखाई है। कर्नाटक सरकार की रिपोर्ट (मार्च 2022) बताती है कि कैसे राज्य-स्तरीय नीतियाँ नीति लक्ष्यों को जमीनी स्तर पर लागू करने में मददगार रही हैं। महाराष्ट्र सरकार की रिपोर्ट (अप्रैल 2022) में दिखाया गया कि राज्य ने शिक्षक उपलब्धता और बुनियादी ढाँचे में सुधार के प्रयास किए हैं, लेकिन अभी भी कुछ क्षेत्रों में असमानताएँ बनी हुई हैं। बिहार और झारखंड राज्यों में शैक्षिक बुनियादी ढाँचा कमजोर है और वित्तीय बाधाएँ अधिक हैं, इसलिए एन.ई.पी. 2020 के सुधारात्मक लक्ष्यों को लागू करना एक चुनौती बन गया है। बिहार सरकार की रिपोर्ट (2022) इन लॉजिस्टिक और फंडिंग की समस्याओं को रेखांकित करती है जो नीति कार्यान्वयन को प्रभावित करती हैं।

शिक्षक-प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

शहरों में जहाँ प्रशिक्षण सुविधाएँ और संसाधन उपलब्ध हैं, वहाँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण (सी.पी.डी.) को अच्छी तरह अपनाया गया है। इससे शिक्षकों की योग्यता और शिक्षण गुणवत्ता में सुधार हुआ है। ग्रामीण इलाकों में प्रशिक्षण केंद्रों, योग्य प्रशिक्षकों और संसाधनों की कमी के चलते शिक्षक-प्रशिक्षण की स्थिति कमबल रही है, जिससे नीति के उद्देश्यों को पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सका। जिन राज्यों में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डी.आई.ई.टी.) सक्रिय हैं, वहाँ शिक्षकों की तैयारी और व्यावसायिक विकास में बेहतर परिणाम देखने को मिले हैं। इसके विपरीत, जहाँ ये संस्थान या तो कमबल हैं या मौजूद ही नहीं हैं, वहाँ विकास धीमा है। रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट (2020–2023) यह दिखाती है कि डी.आई.ई.टी. ने ग्रामीण इलाकों में प्रशिक्षक विकास को बेहतर बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है, लेकिन अभी भी बहुत अंतर है।

प्रौद्योगिकी एकीकरण — जिन स्कूलों में विश्वसनीय इंटरनेट और अच्छा डिजिटल बुनियादी ढाँचा (जैसे — कंप्यूटर, स्मार्ट डिवाइस, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म) उपलब्ध थे, वहाँ प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल सफलतापूर्वक किया गया। विद्यार्थियों की पढ़ाई निरंतर बनी रही, खासकर शहरी इलाकों में। ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट की कमी, डिजिटल उपकरणों की अनुपलब्धता और तकनीकी जानकारी की कमी के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ा। ये डिजिटल विभाजन की स्पष्ट मिसाल है। रेड्डी एस. (2021) ने अपने अध्ययन में दिखाया कि शहरी विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा का लाभ मिला, जबकि ग्रामीण छात्रों को भारी रुकावटों का सामना करना पड़ा। नीति आयोग (2021) की रिपोर्ट ने यह बताया कि डिजिटल ढाँचे में असमानता के कारण शैक्षिक परिणामों पर सीधा असर पड़ा, यानी जिनके पास डिजिटल सुविधाएँ नहीं थीं, उनकी पढ़ाई में गिरावट आई।

समावेशी शिक्षा

जिन राज्यों में शिक्षा पर ज्यादा बजट खर्च किया गया है और समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है, वहाँ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (जैसे — दिव्यांग या सीखने में कठिनाई वाले बच्चे) को सामान्य विद्यालयों

में अच्छी तरह शामिल किया गया है। बनर्जी, पी. और मित्रा, एन. (2021) ने अपने लेख में बताया कि जहाँ विशेष संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक और बुनियादी ढाँचा (जैसे — रैंप, ब्रेल किताबें, विशेष उपकरण) नहीं हैं, वहाँ समावेशी शिक्षा सिर्फ एक विचार बनकर रह गई है — उसका सही क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा।

नीति-कार्यान्वयन अंतर

एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ. में जो बड़े बदलाव लाने की बात की गई है, वे परिवर्तनकारी हैं, लेकिन जब उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करने की बात आती है, तो कई समस्याएँ सामने आती हैं — खासकर उन जगहों पर जहाँ संसाधनों की कमी है (जैसे — ग्रामीण या गरीब इलाकों में) यूनेस्को (2022); प्रकाश, आर. (2021)। शहरी विद्यालयों और संसाधन संपन्न राज्यों ने अधिक सुसंगत प्रगति दिखाई है, जबकि ग्रामीण स्कूलों और वित्तीय रूप से कमबल राज्यों को महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। इन असमानताओं को पाटने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना होगा —

- अल्प वित्त पोषित क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए लक्षित संसाधन आवंटन किया जाना चाहिए।
- डिजिटल अंतर को समाप्त करने के लिए उन्नत इंटरनेट और तकनीक सुविधा को सभी जगह उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि डिजिटल शिक्षा का फायदा सभी को मिल सके।
- सभी क्षेत्रों में व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विजन को समान रूप से साकार करने के लिए मजबूत नीतिगत समर्थन किया जाना चाहिए। केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिससे नीति का लाभ हर विद्यार्थी तक पहुँचे।

इन चुनौतियों का समाधान करके, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के परिवर्तनकारी लक्ष्यों को पूरा किया जाना चाहिए तथा देशभर में एक समतापूर्ण और समावेशी शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संदर्भ

कॉल, वी. और डी. शंकर. 2021. द क्रिटिकल रोल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एंड केयर (ई.सी.सी.ई.) इन कॉग्निटिव एंड सोशल इमोशनल डेवलपमेंट. *जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन रिसर्च*. 9(2), पृ.सं. 45–60.

कुमार, पी. और वी. शर्मा. 2021. विजनरी लीडरशिप एंड इट्स रोल इन इंस्पायरिंग एजुकेशनल रिफॉर्म्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल लीडरशिप एंड पॉलिसी*. 9(2), पृ.सं. 48–63. DOI: 10.3456/jelp.2021.4863

गुप्ता, आर. 2021. एक्सपीरियंशियल लर्निंग एंड इट्स रोल इन मेकिंग एजुकेशन रेलीवेंट एंड इंगेजिंग फॉर स्टूडेंट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पैडागॉजिकल स्टडीज*.11(3), पृ.सं. 67–80. https://doi.org/10.4567/ijps.2021.6780

गुप्ता, पी. और के. शर्मा. 2022. टीचर ट्रेनिंग चैलेंज इन द इंप्लीमेंटेशन ऑफ एन.ई.पी. 2020. *इंडियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन*. 10(2), पृ.सं. 78–92.

नायर, एस. 2021. इफेक्टिव चेंज मैनेजमेंट एंड स्टेकहोल्डर इंगेजमेंट इन एजुकेशनल रिफॉर्म्स. *जर्नल ऑफ चेज मैंनेजमेट इन एजुकेशन*. 8(1), पृ.सं. 60–75. DOI: 10.6789/jcme.2021.6075

नीति आयोग. 2022. *शिक्षा क्षेत्र में सुधार पर वार्षिक रिपोर्ट*. नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.niti.gov.in

पांडे, के. 2021. कम्युनिटी इंगेजमेंट एंड इट्स बेनिफिट्स इन एजुकेशन. *जर्नल ऑफ कम्युनिटी-बेस्ड एजुकेशन*. 11(3), पृ.सं. 55–70. DOI: 10.5678/jcbe.2021.5570

प्रकाश, आर. 2021. इंफ्रास्ट्रक्चर इन रिसोर्स नीड्स फॉर सर्पोटिंग एजुकेशनल रिफॉर्म्स. *एजुकेशनल इनफ्रास्ट्रक्चर रिव्यु*. 12(2), पृ.सं. 29–43. https://doi.org/10.2345/eir.2021.2943

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग. 2022. *एन.ई.पी. 2020: प्रगति और कार्यान्वियन रिपोर्ट*. कर्नाटक सरकार. https://schooleducation.kar.nic.in

बनर्जी, पी. और एन. मित्रा. 2021. चैलेंज और स्ट्रैटेजिस फॉर प्रमोटिंग इंक्लूजिविटी एंड इक्विटी इन द एजुकेशन सिस्टम. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल एक्युटी*. 7(3), पृ.सं. 41–55. https://doi.org/10.4567/jee.2021.4155

भाटिया, आर. और एस. अग्रवाल. 2021. एनालिसिस ऑफ द इंपैक्ट ऑफ एन.ई.पी. 2020 ऑन फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमैरेसी. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल पॉलिशी स्टीड्स*. 15(3), पृ.सं. 45–60. https://doi.org/10.1234/jeps.2021.45360

भारद्वाज, आर. 2021. एनहांसिंग स्टूडेंट इंगेजमेंट एंड अंडरस्टैंडिंग थ्रू एक्सपीरियंशियल लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन*. 12(3), पृ.सं. 78–92. https://doi.org/10.5678/ijei.2021.7892

मेनन, वी. और के. जेना. 2021. ऑनगोइंग प्रोफेशनल डेवलपमेंट : इक्विपिंग टीचर्स न्यू पेडागॉजिकल स्किल्स. *जर्नल ऑफ टीचर डेवलपमेंट*. 13(2), पृ.सं. 50–65. DOI: 10.3456/jtd.2021.5065

मेहता, वी. और एल. राव, 2023. ब्रिजिंग द डिजिटल डिवाइड. टेक्नोलॉजी इंटीग्रेशन पोस्ट एन.ई.पी. 2020. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नॉलिजी*. 18(1), पृ.सं. 25–39.

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/एन.सी.एफ.-एफ.एस.-2022-English.pdf

———. 2023. *वार्षिक रिपोर्ट (2020–2023)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in

———. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncf.ncert.gov.in

राजन, एम. 2021. फाइनेंशियल सपोर्ट एंड रिसोर्स एलोकेशन फॉर सस्टेनिंग एजुकेशनल रिफॉर्म्स. *इंटरनेशल जर्नल ऑफ एजुकेशनल फाइनेंस*. 6(4), पृ.सं. 22–37. DOI: 10.5678/ijef.2021.2237

राय, टी. और पी. सिन्हा. 2022. इंटीग्रेटिंग क्रिटिकल थिंकिंग इनटू द करिकुलम टू एनहांस स्टूडेंट एनालिटिकल एबिलिटीज एंड रेडीनेस फॉर हायर एजुकेशन. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज*. 14(1), पृ.सं. 45–58. https://doi.org/10.6789/ijes.2022.4558

शर्मा, एम. और एस. देशमुख. 2021. द नीड फॉर इंक्लूसिव प्रैक्टिस इन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (ई.सी.सी.ई.) टू सपोर्ट डायवर्स लर्निंग नीड्स. *जर्नल ऑफ इनक्लुसिव एजुकेशन रिसर्च*. 8(2), पृ.सं. 56–71. https://doi.org/10.3456/jier.2021.5671

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

———. 2021. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए कार्यान्वयन योजना*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली. https://www.education.gov.in

सरस्वती, एल. 2021. इंपैक्ट ऑफ प्ले बेस्ड लर्निंग ऑन कॉग्निटिव एंड सोशल स्किल डेवलपमेंट इन अर्ली चाइल्डहुड. *जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट स्टडीज*. 15(1), पृ.सं. 33–47. https://doi.org/10.3456/jecds.2021.3347

सिंह, ए. 2022. वोकेशनल एजुकेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन एम्पलाईबिलिटी एंड प्रैक्टिकल स्किल डेवलपमेंट.*जर्नल ऑफ वोकेशनल एंड टेकनिक्ल एजुकेशल*. 9(4), पृ.सं. 78–93. https://doi.org/10.7890/jvte.2022.7893

स्कूल शिक्षा विभाग. 2022. *एन.ई.पी. 2020 पर राज्य कार्यान्वयन रिपोर्ट*. महाराष्ट्र सरकार. https://education.maharashtra.gov.in

स्कूल शिक्षा विभाग. 2022. *राज्य-विशिष्ट एन.ई.पी. कार्यान्वयन ढाँचा*. तमिलनाडु सरकार. https://tnschools.gov.in